



ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(1): 85-88
© 2019 IJSR
www.anantajournal.com
Received: 14-11-2018
Accepted: 18-12-2018

डॉ. वन्दना रुहेला
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत
विभाग, जे वी जैन कालेज
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

आधुनिक गीति संदर्भ में: शोकगीति "पुरुषार्थ संहिता" का विवेचन

डॉ. वन्दना रुहेला

DOI: <https://doi.org/10.22271/23947519.2019.v5.i1a.1720>

शोधसार

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतमा भाषा होने के साथ-साथ वर्तमान में भी विपुल रचना संसार के साथ अपनी सशक्त उपस्थिति से प्रशंसनीय है। आज भी संस्कृत भाषा में अनेक विधाओं में प्रभूत साहित्य रचना हो रही है। वैशिक संदर्भ में विभिन्न देशों की कविता शैलियों तथा अपने देश की ही पारंपारिक गीत शैलियों को संस्कृत में प्रयुक्त किया जा रहा है। गीतिकाव्य, गीति, गीत अथवा नवगीत तथा अन्य विभिन्न आधुनिक शैलियों का संस्कृत साहित्य में रचा जाना इस समृद्ध भाषा की प्रयोगधर्मिता को प्रकट करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र इसी आलोक में सुप्रसिद्ध आधुनिक कवि एवं परम विद्वान् शिक्षक प्रोफेसर श्रीनिवास रथ द्वारा रचित शोकगीति "पुरुषार्थ संहिता" का समीक्षण प्रस्तुत करने का प्रयास है।

कूट शब्द: पुरुषार्थ संहिता, प्राचीनतमा भाषा, गीभिर्वरुण सीमहि

शोधपत्र

साहित्य की अनेक विधाएँ हैं तथा रचना संसार विपुल है। काव्य यात्रा में भाव स्वभावतः संयुक्त रहते हैं किंतु जब कोई विषय अनुभूति स्तर पर सघन तीव्रता से कविमन को स्पर्श करता है और चित्तद्रुति की लहरियों को ही निर्बाध शब्दों में उतार देता है तो यह गीति हो जाता है। यह भावातिरेक और गेयता गीति का आधार है। ऋग्वेद में देवताओं का आह्वान करती भावप्रवण ऋचाएँ गीति का प्रथम बीज हैं- गीभिर्वरुण सीमहि॥ १

वेदत्रयी में उपासना से सम्बन्धित मंत्र जिनमें भाव तथा गेयता की प्रधानता होती है, सामवेद में संकलित हैं। "गीतिषु सामाख्या"^२ इस प्रकार गीति का आरम्भ तो वैदिक काल से ही हो गया था। आचार्य बलदेव उपाध्याय लिखते हैं समग्र वैदिक संहिताएँ देवताओं की विशिष्ट स्तुतियों से मणित हैं। गीतियों का उदय-स्थान तो स्वयं वेद ही हैं। ^३

Correspondence
डॉ. वन्दना रुहेला
एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत
विभाग, जे वी जैन कालेज
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

गीति का स्वरूप

चित्तद्रुति का कारण जो आहलादकता है वह संयोग शृङ्गार से अधिक करुण और करुण से विप्रलम्भ और उससे भी अधिक शान्त में क्रमशः तीव्रतर होती जाती है।^४ मनसोगलितत्वप्रायरूपा द्रुतिः।^५ अतः चित्तद्रुति रूप आहलादकत्व जिसमें प्रधान होता है ऐसे गीतिकाव्य के विषय भी मुख्यतः यही रस होते हैं। मानव का स्वभाव है है वह प्रसन्न हो या पीड़ा में गेयता उसके आसपास ही रहती है। भावातिशयता गेयता से समन्वित होकर मसि कागद का विषय हो जाती है और यह गीति-काव्य हो जाती है। इसके अतिरिक्त प्रकृति सौन्दर्य तथा प्रत्येक वह विषय जो कवि-मन को अनुभूत्यात्मक गहनता से स्पर्श करता है गीति का विषय हो जाता है। उषा के सौन्दर्य और पवित्रता में निमग्न वैदिक ऋषि कविता की धारा में बहा चला जाता है और उसके सौन्दर्य से अभिभूत वह उसे अपनी कल्पना के विभिन्न रंगों से चित्रित करता जाता है।^६ ऋग्वेद के सोम-गीत और पुरुरवा उर्वशी के प्रेम-गीत आदि गीति रचना का प्राचीन रूप हैं। पंडित चन्द्रशेखर पाण्डेय के शब्दों में- गीतिकाव्य आत्मानुभूति का मानव जीवन की मार्मिक घटनाओं का संगीतात्मक शब्द चित्र है। कवि हृदय की मार्मिक अनुभूतियों का सच्चा उद्गार है।^७

क्रौञ्चवध पर विलाप करती क्रौञ्ची के रुदन से आहत महर्षि वाल्मीकि के मुख से अनायास ही निःसृत हुई कविता ने उनके हृदय के उद्गारों का गीति में प्रकटन कर दिया था-

मा निषाद् प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥।

लौकिक संस्कृत की यह प्रथम कविता पद्य संसार का आदर्श है। कालिदास जब प्रकृति के सौंदर्य में रमे हैं तो ऋतुसंहार लिखते हैं और जब एक वियोगी यक्ष के रूप में अन्तस्तल की अनुभूति की तीव्रता

को शब्दों में भर देते हैं तब वही चित्तवृत्ति "मेघदूतम्" हो जाती है- त्वामालिख्य प्रणयकुपितां....^८ और जब यह गीति सहृदय-मन से संवाद करती है तो जैसे कविमन की चित्तद्रुति-धारा का सहृदयमन की अनुभूति-धारा से संगम हो जाता है। यही रसाभिव्यक्ति, यही कवि और सहृदय का मनः संवाद गीति की सार्थकता है। भावप्रवणता और सहज संप्रेषण गीति का प्रधान तत्त्व है। कवि अनुभूतियों को शब्दों में उकेरने में जितना निपुण होता है गीति का रसोद्रेक उतना ही विस्तार पाता है। पंडित चन्द्रशेखर पाण्डेय के अनुसार-
संस्कृत में मुक्तक काव्य गीति का प्रतिनिधित्व करते हैं। संस्कृत के गीतिकाव्य मुक्तक और प्रबंधात्मक दोनों शैलियों में उपलब्ध होते हैं।^९
संस्कृत के आधुनिक कवियों ने नवीन संदर्भों में अपनी वाणी को विशेष आकार दिया है। इन्हें मुक्तक कहें गीति, कविता या गीत अथवा नवगीत या अन्य कोई विधा सभी को अपने भाव सौन्दर्य से समृद्ध कर रहे हैं। आधुनिक संस्कृत कविता अन्य भाषाओं की कविता विधा से प्रभावित हुए बिना नहीं रही है वर्तमान युग के संस्कृत कवियों में इस प्रकार की प्रयोगवादी प्रवृत्ति पाई जाती है जिसमें उन्होंने अन्य भाषाओं की कविता विधाओं और साथ ही पारम्परिक गीत शैली का भी संस्कृत में सफल प्रयोग किया है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य के मूर्धन्य कवि अभिराज श्री राजेन्द्र मिश्र ने अपने काव्यास्त्रीय ग्रंथ "अभिराजयशोभूषण में रेखाङ्कित किया है-

काव्यं रसात्मकं चेद् शब्दार्थकलेवरम्।
भिद्यते खलु निर्मित्या रुचिरूपप्रभेदतः॥।^{१०}

आधुनिक रचना संसार में सानेट, इलेजी, गङ्गल, कजरी, सोहर, चैती, जापानी शैली हाइकु, तन्का कोरियाई शिजो, कवाली, रागकाव्य, आॅपेरा के आधार पर संगीतिका आदि विभिन्न रुचि रूप वाली विधाएं उल्लेखनीय हैं।

शोकगीति-

शोक में जब कवि मन की भावसरिता उद्वेलित होती है तब शब्दों में प्रस्फुटित पीड़ा शोकगीति हो जाती है। यह शोकगीति elegy अंग्रेजी कविता की प्रमुख विधा है। स्वामीनाथन की ध्वस्तं कुसुमम्, मधुकर गोविन्द की समृतिरङ्गम्, दीपक घोष के विलाप पञ्चिका जैसे विलाप काव्य तथा अन्य कवियों के शोकगीतिकाव्यों के अतिरिक्त गांधी, नेहरू इंदिरा आदि राजनेताओं के देहावसान पर आकुल भावों का मार्मिक प्रस्तुतीकरण शोकगीति के रूप में हुआ।

वर्तमान युग के प्रतिभाशाली प्रयोगवादी कवियों में प्रोफेसर श्रीनिवास रथ का नाम सुविख्यात है। प्रोफेसर श्रीनिवास रथ अपने प्रशंसकों में रथ साहब के नाम से प्रसिद्ध थे। इनके संस्कृत गीतों में भावों की मञ्जुलता, नवीन रीति, वैचारिकता इत्यादि के साथ युगबोध उल्लेखनीय है।

प्रथम कृति "तदेव गगनं सैव धरा" साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा पुरस्कृत है इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश संस्थान से विश्वभारती, देववाणी परिषद् देहली से पंडित राज जगन्नाथ पुरस्कार तथा अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित हैं। संस्कृत भाषा को समृद्ध करने वाले एक कर्मयोगी का जीवन व्यतीत कर यह प्रतिभाशाली सम्मानित कवि एवं सुयोग्य शिक्षक सन् 2014 में कीर्तिशेष हुए।

इनकी कृतियों में तदेव गगनं सैव धरा, बलदेवचरितम्, प्रतारित वयम्, वचनवैशसम्, चेतना विलीयते, किं मधुना, उठजं भवतु, यातनायतनम्, इत्यादि तथा अनेक गूढ गम्भीर शोध-लेख हैं।^{११}

इनकी कविता भावसान्द्रता, वर्तमान परिवेश की याथातथ्य व्याख्या, सौन्दर्यानुभूति की अनाविलता और कल्पनाप्रवण दृष्टि से अछूते बिम्बों की सर्जना के कारण समकालीन संस्कृत साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान प्रस्तुत करती है।^{१२}

कवि की "पुरुषार्थ संहिता"^{१३} में तत्कालीन समय की जनप्रिय नेत्री प्रियदर्शिनी इंदिरा की निर्मम हत्या से उद्वेलित शोक ही जैसे द्रवित हो गीतियों के रूप

में आकारित हुआ है। तेजस्विनी इंदिरा के लिए "पुरुषार्थ संहिता" शीर्षक स्वयं में ध्वन्यात्मक है। इंदिरा का चरित्र वस्तुतः पुरुषार्थ से ही महनीय और अनुकरणीय बना था अतः कवि का उसे पुरुषार्थ-संहिता नाम देना उचित ही है।

पारम्परिक काव्यशास्त्र की दृष्टि से पुरुषार्थ संहिता कलापक^{१४} की श्रेणी में आती है कवि ने इंदिरा की हृदय विदारक हत्या से चहुं और व्याप्त शोक को अपनी कविता का विषय बनाया है-

सविता ताम्यति धरणी विदलति
ग्रन्थगता गुरुवाणी रोदिति
हिंसा जर्जरिता
रेणुरुषिता व्रण विरूपिता
विलुठति भुवि पुरुषार्थ संहिता॥

सूरज अंधकार में डूब गया है, धरती विदलित हो गई है, ग्रन्थ में बैठी गुरुवाणी रुदन कर रही है... हिंसा से जर्जरिता धूलि से आकुल, व्रणों से विरूपित लहूलुहान पुरुषार्थ संहिता धरती पर पड़ी है। कवि के साथ-साथ आकुलित जन-मानस की अन्तर्वेदना मानो शब्दों में उत्तर आई है।

प्रियदर्शिनी इंदिरा के हत्यारे सिख धर्म के अनुयायी थे, गुरुवाणी के रुदन से यह अभिव्यक्त हुआ है कि गुरुवाणी अपने अनुयायियों द्वारा किए गए दारुण कृत्य से घोर व्यथित हो रही है। अद्भुत मार्मिकता है। हिंसा पूर्वक जिसे गोलियों से छलनी कर दिया गया था ऐसी धूलधूसरित घावों से भरी अस्त-व्यस्त पड़ी इंदिरा को पुरुषार्थ संहिता कहने मात्र से जननायिका के जीवन चरित के उज्जवल और प्रशंसनीय कर्मों का स्मरण और उसकी ऐसी परिणति हृदय को मार्मिकता से अभिभूत करती है। इंदिरा की हत्या अपने ही चिरपरिचित विश्वस्त अंगरक्षकों ने की थी - जैसे चिरपरिचित शंकरतनु पर रहने वाले विषधर के दंश से पार्वती मूर्छित कर दी गई अथवा सहसा अपने ही घर की दीपशिखा की वहिन से सती कवलित हो गई -

चिरपरिचित- शङ्करतनुविषधर
 विषमदंश मूर्छिता पार्वती
 सहसा निजगृह- यज्ञवेदिका
 वहिनशिखाकवलिता वा सती
 दिशि -दिशि सपदि कपर्दी धावति
 भुवनपावनी गड्गा विलपति
 पापभयाकुलिता....॥

विडम्बना को कैसी अद्भुत मार्मिकता से अङ्गित किया है। शंकर का दिशि -दिशि में विलाप जन-जन के विलाप की व्यञ्जना हो रही है और "भुवनपावनी गड्गा विलपति पापभयाकुलिता पङ्कित" तो पीड़ा की प्रतिमा सी हो गई हैं। अन्धे बिम्बविधानों से इन्दिरा की हत्या की पृष्ठभूमि और अपने ही देशीय औश्र विश्वस्त जनों द्वारा विश्वासघात की वेदना अति मार्मिकता से सहदय को अभिभूत कर देती है।

चेतना प्रलयकालीन संवर्तक जलधर के घने अन्धकार से आवृत हो गई है। श्मशान के धूम से व्याकुलता फैल रही है। दुरभिसन्धि से भयभीत मानवता इन्दिरा के शोक से आकुल होकर सिसक रही है-

शोकाकुल मानवता सीदति
 दुरभिसन्धिभीता ।
 रुधिरपिपासा- भाषा व्यथयति नामरूपरहिता॥

अंतिम पंक्ति में तो पुज्जीभूत पीड़ा और विडम्बना की अनुभूति जैसे हृदय को करुणाब्धि में डुबो ही दिए चली जा रही है। सर्वत्र भावानुकूल भाषा, अद्भुत बिम्बविधान समन्वित वर्णनीयता, भावाभिव्यक्ति के मार्ग में अनायास प्रकाशित अनुप्रास, विशेषोक्ति, मानवीकरण जैसे अलङ्कार करुण रस की द्रुति में वृद्धि कर अत्यंत चमत्कार पूर्ण अभिव्यंजना कराते हैं। गीति के सहदयमनः संवाद से सद्यःपरनिवृत्ति रूप प्रयोजन सिद्ध करने में कवि ने पूर्ण साफल्य प्राप्त किया है।

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद १ / २५ / ३
2. पूर्व मीमांसा २ / १ / ३६
3. संस्कृत साहित्य का इतिहास डॉ जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल, पृष्ठ संख्या १३५
4. आहलादकत्वं माधुर्यं शृङ्गारे द्रुतिकारणम्। करुणे विप्रलम्भे तच्छान्ते चातिशयान्वितम्॥ काव्यप्रकाश ८ / ६८
5. तदेव वृत्तिभाग
6. अवस्थ्यमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी। स्वार्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्तादिद्वः प्रपथे आ पृथिव्या॥। ऋग्वेद ३ / ६१ / ४
7. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा पृष्ठ संख्या 261
8. उत्तरमेघ ३८
9. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा / गीतिकाव्य पृ सं 223
10. अभिराजयशोभूषण ४ / १९
11. नवम्बर १५ समार्वतन २४ के आलेख, आचार्य श्रीनिवास रथ एक यशः पूरित कवि व्यक्तित्व प्रो मनुलता शर्मा के आधार पर
12. आधुनिक संस्कृत साहित्य पृ. संख्या १६४
13. शोधप्रभा श्रद्धांजलि विशेषांक तृतीयो विभागः श्रद्धालोक / १२ १९८६ श्री बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत विद्यापीठ
14. साहित्यदर्पण ६ / ३१४ -३१७ छन्दोबद्धपदं पद्यं तेन मुक्तेन मुक्तकम्। द्वाभ्यां तु युग्मकं संदानितकं त्रिभिरिष्यते॥। कलापकं चतुर्भिर्श्च पञ्चभिः कुलकं मतम्।